Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

Laxmi Singh[1]* Dr. Vijay Shukla[2]

[1] Research Scholar, Swami Vivekananda University Sagar MP

[2] Professor, Department of Education, Swami Vivekananda University, Sagar, MP

----------X----------

भूमिका

शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है, इसके द्वारा मानव की अंतर्निहित योग्यताओं को विकसित करके समाज सम्मत बनाया जाता है। शिक्षा ने केवल उसे अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देती है, वरन उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है जिससे वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा इन कार्यों को संपन्न करके ही सच्ची शिक्षा कहलाने की अधिकारिणी हो सकती है।

डॉ. राधा कृष्णन्न के अनुसार: शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार: मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।

गाँधी जी के अनुसार: शिक्षा से मेरा तात्पर्य इस प्रक्रिया से है, जो बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के रूपों का उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास करें। शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के व्यक्तित्व के कई पहलू होते हैं जैसे: शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं भावनात्मक। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के इन सभी पहलुओं का संतुलित विकास होना चाहिए अतः शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। अतः शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है और शिक्षा की योजना में बालक के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था होना चाहिए।

व्यक्तित्व के विकास में किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण अवस्था है, यह बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य परिवर्तन काल है, जो आधुनिक व विशिष्टीकृत होते हुए भी सामाजिक जीवन की देन है। किशोर बालकों के व्यक्तित्व विकास के लिए विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, खेल-कूद, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, एन.सी.सी., एन.एस.एस. कार्यक्रम आदि आयोजित कराये। विद्यालयों द्वारा देश शैक्षिक भ्रमण का भी आयोजित किये जाये जिससे बालकों में देश के कई राज्यों के भ्रमण के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान हो सकेगा। इस प्रकार बालकों का व्यक्तित्व विकास ठीक तरह से हो सकेगा।

आज युवावस्था में आने के लिए परिपक्वता, गुण, कौशल और विशिष्टता प्राप्त करना आवश्यक हो गया है क्योंकि इसके बिना उसके जीवन का निर्वाह कोई आधार बनता है न वह समाज में सम्मान जनक स्थिति बना सकता है। विद्यालय और घर में समायोजन की समस्या को गहनता से हल करने के लिए किशोरों का द्वंदात्मक एवं विद्रोही व्यवहार को प्रेरित करता रहा है। बालकों की समस्याओं एवं उनके व्यक्तित्व समायोजन पर अधिक जोर दिया जा चुका है।

सामान्य रूप में यह माना जा सकता है कि किसी भी व्यक्ति का विशिष्टतम लक्षण की उसका व्यक्तित्व होता है। यह उसके व्यवहार, अभिरूचि, शारीरिक रचना, बौद्धिक स्तर, चरित्र तथा इसी प्रकार के स्पष्ट लक्षणों से मिलकर बनता है। इस प्रकार 'व्यक्तित्व' शब्द से सम्पूर्ण व्यक्ति का आभास होता है। इसी आधार पर हम अनेक व्यक्तियों को हँसमुख, आकर्षक, प्रभावशाली, डरपोक, चुप्पा, दब्बू आदि मान लेते हैं। हमारी इस प्रकार की धारणायें एक दिन में नहीं बन जातीं। कुछ समय तक

www.ignited.in

दैनिक सामाजिक जीवन में व्यक्ति के व्यवहार को देखने और समझने के बाद ही यह धारणायें बनती हैं।

परन्तु वैज्ञानिक मनोविज्ञान व्यक्ति का अध्ययन अधिक विश्लेषण के आधार पर करता है। सम्पूर्ण व्यक्ति के व्यवहार को देखने या समझने से जो धारणायें हम अधिकतर बना लेते हैं, उनका स्थान वैज्ञानिक विश्लेषण में नहीं है। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति मनोविज्ञान की प्रयोगशाला में अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया जाता है तो उसके व्यक्तित्व को समझने के लिए अनेक परीक्षण, साक्षात्कार और प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ेगी तथा एक साथ सम्पूर्ण व्यक्ति का अध्ययन न करके उसके व्यक्तित्व के विभिन्न अंशों का अध्ययन किया जायेगा। इस प्रकार व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष मनोवैज्ञानिक के लिए विश्लेषण की सामग्री बन जायेंगे यद्यपि मनोवैज्ञानिक यह भली-भांति समझता है कि विभिन्न अंश सम्पूर्ण व्यक्तित्व के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं।

इस प्रकार व्यक्तित्व के विकास के लिए विद्यालयों में इस प्रकार का वातावरण का निर्माण किया जाये जिसमें बालक का संपूर्ण रूप से व्यक्तित्व का विकास हो सके। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक रूचि का व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो सके।

व्यक्तित्व का अर्थ

मनोवैज्ञानिक भाषा में व्यक्ति अपने आप में जो कुछ भी है वही उसका व्यक्तित्व है। अपने प्रति और दूसरों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार का यह एक समग्र चित्र है। इसमें व्यक्ति के पास शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जो कुछ भी होता है वह सभी सम्मिलित होता है। थोड़े शब्दों में व्यक्तित्व वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति के पास होता है।

इस प्रकार से निश्चित रूप से 'व्यक्तित्व' शब्द बाह्य रूप, आकृति और व्यवहार से अधिक गूढ अर्थ सजोये हुए है जिसे निश्चित शब्दों में परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। फिर भी बहुत-से मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने तरीको से इसे परिभाषा में बांधने का प्रयत्न किया है। इनमें से कुछ प्रयत्नों की चर्चा नीचे की जा रही है।

जे.बी. वाटसन- ''विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में जो भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार को जो भी रूप पाया जाता है, उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।

इस प्रकार वाटसन ने व्यवहारवादी (Behaviourist) होने के कारण व्यवहार पक्ष पर बल देते हुए किया व्यक्ति के घनिष्ठ सम्पर्क में आने पर हम उसके ऊपर जो भी प्रभाव छोड़ते हैं अर्थात् वह जैसी भी हमें समझता है उसी को व्यक्तित्व कहा है।

मार्टन प्रिंस - उसने वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की भूमिका को स्वीकार करते हुए व्यक्तित्व की इस प्रकार परिभाषा दी है, ''व्यक्तित्व व्यक्ति की सभी प्रकार की जन्मजात प्रकृति, आवेगी, प्रवृत्तियों, इच्छाओं एवं मूल-प्रवृत्तियों और अनुभवों के द्वारा अर्जित बातों का योग है।''

जी. डब्ल्यू. ऑलपोर्ट- व्यक्तित्व की 49 विभिन्न परिभाषाओं की समीक्षा करने के बाद ऑलपोर्ट ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए-''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।

यद्यपि ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व की एक पूर्ण परिभाषा देने का दावा किया है लेकिन उसने भी संगठन, गतिशील, मनोवैज्ञानिक व्यवस्था, अपूर्व समायोजन और वातावरण आदि शब्दों का प्रयोग कर दूसरों की तरह व्यक्तित्व का केवल वर्णन ही किया है। केवल सिद्धांत पक्ष पर बल देने और व्यावहारिक अथवा गतिशील प्रत्ययों (Concepts) के रूप में इसका वर्णन करने से व्यक्तित्व को सही रूप में समझना कठिन है।

आर.बी. कैटल और आईजैक जैसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक का भी यही दृष्टिकोण है। वे पूरी तरह यह अनुभव करते हैं कि अगर व्यक्तित्व का प्रदर्शन, मापन और अंकन नहीं किया जा सकता तब इसे मनोविज्ञान के स्थान पर दर्शनशास्त्र अथवा कला का विषय माना जाना चाहिए। व्यक्तित्व के अर्थ को स्पष्ट करने के संदर्भ में उन दोनों के विचार निम्न हैं-

आर.बी. कैटल- ''व्यक्तित्व वह है, जिसके द्वारा हम ये भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा।''

एच.जे. आईजैंक- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा-बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''

www.ignited.in

अध्ययन की उद्देश्य

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व को तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व के स्तर पर सार्थ अंतर नहीं है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व के स्तर पर सार्थक अंतर नही है।

न्यादर्श-

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है। जिसमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएं सम्मिलित हैं।

उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में व्यक्तित्व मापने के लिये डॉ. अशोक वर्मा एवं डॉ. श्रीमति मीनू अग्रवाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सारणीयन-

तालिका क्रमांक 1

शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना

[N=300]

क्र.	आयाम	शासकीय छात्र		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	58.20	6.50	57.41	7.50	0.987	NS	NS
	df 298						**1.97**	**2.59**

तालिका क्रमांक 1 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना को दर्शाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (58.20) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (57.14) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 2

शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना

[N=300]

क्र.	आयाम	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	61.40	7.56	58.60	6.42	3.46	S	S
	df 298						**1.97**	**2.59**

तालिका क्रमांक 2 में शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना को दर्शाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (61.40) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (58.60) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है।

www.ignited.in

तालिका क्रमांक 3

शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना

[N=300]

क्र.	आयाम	शासकीय छात्र		अशासकीय छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	58.20	6.50	58.60	6.42	0.536	NS	NS
	df 298						**1.97**	**2.59**

तालिका क्रमांक 3 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना को दर्शाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (58.20) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (58.60) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 4

शासकीय छात्राएँ एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना

[N=300]

क्र.	आयाम	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	61.40	7.56	57.41	7.50	3.99	S	S
	df 298						**1.97**	**2.59**

तालिका क्रमांक 4 में शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना को दर्शाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (61.40) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (57.41) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' पर सार्थक अंतर है।

अतः शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

निष्कर्ष-

- शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।
- शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है।
- शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।
- शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

परिकल्पना परीक्षण-

1. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
2. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
4. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. गैरेट, एच.ई. (1981). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड संस बाम्बे.
2. सिंह, अरूण कुमार (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पीएच.डी. पटना.
3. हरलाक, ई.वी. (1979). डेवलपमेन्टल साइकोलाजी, टी.एम. एवं पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
4. आई.ए., गेट्स एवं जरसील (1958). शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क.
5. कपिल, एच. के. (2009). सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

www.ignited.in

6. पाठक, पी.डी. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

7. मंगल, एस. के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.

8. भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

9. वुडवर्थ आर.सी. एवं मारक्विस डी.जी. (1947). शिक्षा मनोविज्ञान, एशिया पब्लिशर्स, बाम्बे।

10. वरनॉन, पी.ई. (1962). पर्सनॉलिटी टेस्ट एण्ड एसेसमेंट, मेथ्यू एण्ड कंपनी, लंदन।

11. ऑलपोर्ट जी. डब्ल्यू. (1948). साइक्लाजिकल इंटरप्रिटेशन, होल्ट एण्ड कंपनी, न्यूयार्क।

12. पाण्डे, आर. एस. (2001). एजूकेशन साइक्लाजी, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

Corresponding Author

Laxmi Singh*

Research Scholar, Swami Vivekananda University Sagar MP